शब्द-ब्रह्म

E ISSN 2320 – 0871

भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016

पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

साहित्य और ग्रामीण जीवन

शोभा चौहान (शोधार्थी)

तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय

इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

यह सर्वविदित है कि भारत की आत्मा गावों में बसती है। भारत के विकास के विविध सोपानों में आरण्यक सभ्यता और ग्रामीण सभ्यता का काल सर्वाधिक लंबा रहा है। औद्योगिक सभ्यता तो बहुत नजदीक की है। हजारों सालों में विकसित ग्राम सभ्यता के आस-पास भारत के समृद्ध साहित्य की रचना हुई। यह साहित्य मनुष्य के जीवनानुभवों से निःसृत हुआ। साहित्य ने सामजिक विकास से आगे जा कर उसका मार्गदर्शन किया। इसलिए साहित्य और समाज के सम्बन्ध को अटूट माना गया। समाज को जब जिस प्रकार के साहित्य की आवश्यकता थी, तब साहित्यकारों ने उसमें अपना योगदान दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में साहित्य की विविध विधाओं में ग्रामीण जीवन और चेतना को समग्र रूप में प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावना

'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का कथन है -'भारत का स्वत्व और आत्मा गाँव है' यह एक यथार्थपरक सत्य होने के साथ -साथ ग्रामीण जीवन को साहित्य का केंद्र होने का गौरव की अनुभूति देता है।'1 भारत ग्रामों में बसता है । भारत-जैसे कृषि प्रधान देश के लिए , जहाँ लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि व्यवसाय में संलग्न है , ग्राम जीवन के अध्ययन की आवश्यकता बढ़ जाती है। 'देश की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के अध्ययन के लिए भी ग्राम जीवन के अध्ययन की आवश्यकता होती है , बदलते हुए परिवेश में गाँव क्या रूप ग्रहण कर रहा है ? उसका भावी स्वरूप क्या होगा ? इन सभी बातों का अध्ययन आवश्यक है। 'साहित्य के प्रलेखकीय स्रोतों में ग्रामीण जीवन का व्यापक चित्रण होता है ।'2 हिंदी साहित्य के विविध कालों में ग्रामीण जीवन का युग बोध हुआ है । 'वैदिक काल से ही वैदिक साहित्य में ग्रामीण जीवन की व्याख्या की गई है। वैदिक ग्रंथों में ग्रामीण परिवेश, कृष्टि, जोताई, बोआई, कटाई, गहाई, आदि जैसे कार्यो का उल्लेख मिलता है'3 रामायण काल हो महाभारत काल हो मौर्य कालीन साहित्य या बौद्ध कालीन साहित्य, साहित्य की हर विधा में ग्रामीण जीवन लोकप्रिय बनकर उभरा है। '4 प्राचीन आर्य भी प्रकृति के बड़े भक्त थे , वे प्रकृति के स्वाभाविक रूप को अपनी हिकमत अमली के द्वारा कुरूप या उसे बदलना नहीं चाहते थे। भारवि और माघ ने कहीं-कहीं ग्राम्य शोभा का वर्णन किया है। '5 इस तरह ग्राम जीवन को सही रूप में समझने का एक आधार उसको लेकर लिखा गया साहित्य भी है। 'इस स्रष्टि के आरम्भ से अब तक मनुष्य के परिष्कृत हृदय ने उन्नत कोटि के सहित्य की रचना की है और साहित्य ने ही

करोड़ों लोगो के जीवन की दशा और दिशा बदलने का कार्य किया है। निश्चय ही हजारों वर्षो से भारत के गाँव समाज का एक केन्द्रीय भाव है तभी तो यह कहा जाता है कि—विश्व साहित्य के पन्नों पर इतिहास में मिश्र मेसोपोटामिया तथा रोम जैसी सभ्यताएं मिट गयी हैं, लेकिन भारत की संस्कृति उसके साहित्य में गाँव के स्वरुप के रूप में जीवित है। ’6 ग्रामीण जीवन को समझने के लिये साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से साहित्य के अलग-अलग कालों में , विधाओं के माध्यम से, समकालीन, समसामयिक सन्दर्भ के परिप्रेक्ष्य में, सांस्कृतिक और आर्थिक युगोबोध या युग संदर्भो को अपनी लेखनी तथा रचनाओं में उकेरा है। साहित्य ने ही उसके संरक्षकों के माध्यम से ग्रामीण तथा अंचलों के जीवन के यथार्थ को समाज के समक्ष चिन्हांकित कर न केवल परिणाममूलक प्रयास किये हैं, बल्कि यथार्थ के प्रामाणिक और मर्मस्पर्शी चित्र भी दिए हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में विभिन्न कालों में साहित्य की विधाओं के माध्यम से ग्रामीण जीवन का अध्ययन तथा समसामयिक ग्रामीण परिवेश से तादात्म्य बैठाते साहित्य में ‘ग्रामीण जीवन’ की भूमिका को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है ।

मुख्य शब्द - ग्रामीण - गाँव ,ग्राम,जन, परिष्कृत -- सुधारा हुआ प्रलेखकीय - किसी साहित्यिक अथवा सांस्कृतिक समूह का लिखित दस्तावेज विशेषकर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में, आंचलिक -क्षेत्र स्तरीय या स्थानीय शैली , कृष्टि- कृषि कर्म , तादात्म्य- सम्बन्ध, ‘ऐसी अवस्था जिसमें कोई चीज किसी दूसरी वस्तु के साथ तदात्म हो जाय या उसके साथ मिलकर उसका रूप धारण कर ले।7

प्रस्तावना

‘कवीन्द्र रविन्द्र नाथ टैगौर के अनुसार, “साहित्य का सहित’ शब्द मिलन-भाव का सूचक है । वह (मिलन) भाव और भाव का,भाषा और भाषा का, ग्रन्थ और ग्रन्थ का ही मिलन नहीं है, अपितु मनुष्य के साथ मनुष्य, अतीत के साथ वर्तमान का और दूर के साथ निकट का अन्तरंग मिलन भी है ,जो साहित्य के अतिरिक्त अन्य से संभव भी नहीं।”8 ‘साहित्य का प्रयोजन आत्मानुभूति है।‘ ‘अनुभूति की प्रमाणिकता’ और ‘भोगा हुआ यथार्थ’ को साहित्य का आधार माना गया तो समाज के साथ साहित्य व्यक्ति की अभिव्यक्ति बना । ‘साहित्य मनुष्यता और संघर्ष के सापेक्षित संबंधों का पारिभाषिक सूत्र है। जीवन और मनुष्य के इस सर्वकालिक, सार्वभोमिक अक्षत साहित्यिक मन्त्र को विभिन्न कालों में विधाओं और भाषाओं के माध्यम से भी समझा गया ।’9 ‘समाज एक बड़ी वैचारिक संस्था है। समाज भाषा में जीता है और साहित्य में संस्कारित होता है इसलिए साहित्य को समाज का अभिन्न अंग माना गया है।’10 परिस्थितियों में परिवर्तन आने के कारण जीवन प्रवाह में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक है। इसी परिवर्तन के अनुरूप नयी जीवन दृष्टियों का विकास होता है , जिनमें ग्रामीण, आंचलिक, शहरी तथा महानगरीय जीवन का सत्य उसका युगबोध समसामयिक परिवेश साहित्य के माध्यम से उभरकर सामने आता है। भारतीय साहित्य की मूल धारा की प्रेरणा और उसका केन्द्रीय भाव ग्रामीण जीवन ही है। साहित्य की तकरीबन हर विधा में अपनी लेखनी का लोहा मनवानेवाले साहित्यकार समकालीन ग्रामीण भारत की आवाज को उठाने तथा समसामयिक सामाजिक स्थितियों को अपने लेखन अथवा रचनाओंके माध्यम से चित्रित करने के लिए पहचाने जातेहैं।

साहित्य में 'ग्राम' शब्द का प्रयोग अत्यंत प्राचीन काल से होता आया है 'ग्राम' का आदि रूप जन रहे हैं, उनकी कल्पना एक परिवार के रूप में रही है। वैदिक समाज का संगठन कबीलों के रूप में था इन कबीलों को 'जन' कहते थे।'11 'प्राचीन काल से ग्राम भारतीय समाज व्यस्था का एक आधारभूत एकक रहा है। यहाँ के शास्त्रों और समाज का विकास आरोही श्रंखला के रूप में हुआ जिसमें सबसे आरम्भ में 'एक गृह' अथवा 'कुल' था उसके ऊपर आगे चलकर 'ग्राम',विशु जन तथा राष्ट्र एकक थे।'ग्राम' की संज्ञा अभी भी भारत के लिए ही प्रयुक्त होती है ।'12 साहित्य समीक्षकों के अनुसार साहित्य के माध्यम से ही ग्रामीण जीवन का यथार्थ कृषि प्रधान समाज, जाति प्रथा,महाजनी व्यवस्था,रूढ़िवाद की गहरी समझ देखने को मिलती है 'हिंदी में साहित्य रचना आठवीं ईसवीं शताब्दी में आरम्भ हो गयी थी।विगत तेरह सौ वर्षों के हिंदी साहित्य का विवेचन उसे चार भागों में बाँटकर किया जाता है - ये काल विभाग आदिकाल (वीरगाथा काल संवत् 1050 - 1375), पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल, संवत्-1375 - 1700) उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल संवत्- 1700-1900) आधुनिक काल (गद्य काल संवत्- 1900-अब तक)।'13

इन कालों को उनकी साहित्यिक कृतियों की प्रवृत्तियों के आधार पर वीरगाथा काल , भक्तिकाल, रीतिकाल और नवीन विकास या पुनर्जागरणकाल भी कहा जाता है। "रीतिकालीन प्रवृत्तियों का अंत होते-होते देश में अंग्रेजी राज्य स्थापित हो गया और उसके साथ ही हिन्दी साहित्य में भी एक नए युग का सूत्रपात हुआ। सबसे बड़ा परिवर्तन यह हुआ कि साहित्यिक अभिव्यक्ति का रूप 'पद्य' से बदल कर 'गद्य' हो गया। नई चुनौतियाँ जीवन के प्रति नए दृष्टिकोण अपनाने की मांग कर रही थी। अत: देखते-देखते रीतिकालीन परम्पराओं पर जैसे पटाक्षेप हो गया और समाज नए युग के विहान में जागने के लिए नेत्र-उन्मीलन करने लगा। 'आजादी के बाद ग्रामीण जीवन को केंद्र में रख कर अनेकों लेख कहानी उपन्यास के रूप में प्रकाशित हुए , जिसमें मैलाआँचल , राग दरबारी , भूदान, लोकऋण, सोना-माटी, धरती धन न अपना, अग्निपर्व, इदन्नमम, चाक प्रमुख हैं। यशपाल के 'झूठा-सच' का साहित्य में विशेष स्थान है। भगवतीचरण वर्मा के 'सबहिं नचावत राम गुसाईं' में प्रशासनिक भ्रष्टाचार को बहुत ही गहराई से चित्रित किया गया है। राही मासूम रजा का 'आधा-गाँव', अमृतलाल नागर के उपन्यास 'करवट', मन्नू भण्डारी के 'महाभोज', भीष्म साहनी का 'तमस' यशपाल के 'झूठा-सच' का साहित्य में विशेष स्थान है।"14 "आंचलिक लेखन के माध्यम से हिंदी साहित्य की दुनियाँ में क्रांति लाने वाले महान लेखक फणीश्वर नाथ रेणु को ग्रामीण परिवेश से खास लगाव था और अपने लेखन के जरिए उन्होंने हर बार पाठकों को एक नए परिवेश से परिचित कराया। हिन्दी साहित्य जगत में मैला आंचल और परती परिकथा जैसे उपन्यासों के माध्यम से रेणु को आंचलिक उपन्यासकार का दर्जा मिला। हिंदी साहित्य में पहली दफा आंचलिक लेखन का प्रयोग उन्होंने ही किया था। रेणु के लेखन में ग्रामीण पृष्ठभूमि का होना और सामाजिक समस्याओं पर जोर ही उन्हें प्रेमचंद के बाद हिंदी साहित्य का सर्वाधिक लोकप्रिय लेखक बनाता है। प्रेमचंद का लेखन व्यक्ति विशेष के इर्द-गिर्द घूमता है, जबकि रेणु का लेखन पूरे समाज का चित्रण करता है। रेणु ने गुलाम और आजाद दोनों भारत को देखा है।' 15 इसके अतिरिक्त वृन्दावन लाल वर्मा भवानी

प्रसाद मिश्र और बालमुकुन्द जी के सहित्य में ग्रामीण जीवन कीप्रवृत्ति पल्लवित और पुष्पित होती रही।

साहित्य की विधाएँ: ग्रामीण जीवन के परिप्रेक्ष्य में

काव्य में ग्रामीण जीवन – 'आधुनिक काल का हिंदी पद्य साहित्य पिछली सदी में विकास के अनेक पड़ावों से गुज़रा। जिसमें अनेक विचारधाराओं का बहुत तेज़ी से विकास हुआ। जहाँ काव्य में इसे छायावादी युग , प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी युग , नयीकविता युग और साठोत्तरी कविता इन नामों से जाना गया , छायावाद से पहले के पद्य को भारतेंदु हरिश्चंद्र युग और महावीर प्रसाद द्विवेदी युग के दो और युगों में बांटा गया। '16 'डॉ. रामकुमार वर्मा ने स्वयँभू को हिन्दी का पहला कवि मानते हुए हिन्दी साहित्य का आरम्भ संवत 750 विक्रमी से स्वीकार किया। कविता के क्षेत्र में पहले छायावाद का आगमन हुआ , जिसको उत्कर्ष पर पहुँचाने वाले जयशंकर प्रसाद , सुमित्रानंदन पंत और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसे कवि हुए। महादेवी वर्मा, राजकुमार वर्मा और भगवतीचरण वर्मा की त्रयी ने भी छायावादी काव्यधारा को आगे बढ़ाया। छायावाद के बाद प्रगतिवाद का उदय हुआ , जिसकी प्रेरणा समाजवादी विचारों के प्रचार से आई जसकी झलक काव्य में स्पष्ट दिखाई दी। प्रगतिवाद का उत्तराधिकारी प्रयोगवाद बना , जिसके ध्वज-वाहक सच्चिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय रहे। प्रयोगवाद के बाद नई कविता का युग आया।"17 वादों से अलग दूर कविता के क्षेत्र में हम जिन कवियों का नाम सुनते है उनमें रामधारी सिंह दिनकर , शिवमंगल सिंह सुमन , सोहन लाल द्विवेदी की अपनी अलग-अलग विशेषताएं हैं। भवानी प्रसाद मिश्र , नागार्जुन, केदारनाथ, नरेश महेता के अपने काव्यादर्श हैं, जो किसी वाद से नहीं बंधे। "सुमित्रानंदन पंत की प्रगतिवादी काव्य रचनाओं में 'ग्राम्या' का नाम सर्वोपरि है। ग्राम्या विशुद्ध प्रगतिवादी रचना है। 'ग्राम्या' की रचना सन 1940 में हुई। कृषि प्रधान देश भारत में प्रमुख समस्या ग्रामीण जन –जीवन के उद्धार की है अत: भारतीय ग्रामों के कल्याण के लिए पंत जी ने मार्क्सवाद की उपयोगिता अनुभव की और ग्राम्या को जन्म दिया।"18 'निराला' ने किसान जीवन और प्रतिरोध के चित्र नए पत्ते में अंकित किये।"19 "रामविलास शर्मा की तारसप्तक कविताओं में ग्रामीण जीवन वैचारिक सौन्दर्य के साथ क्रान्तिकारी परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया है। ये कवितायेँ अपने ही ढंग से एक बड़े अभाव की पूरी करती हैं। रामविलास शर्मा के जन-साधारण में ग्रामीण जन, खेतीहर किसान एवं ग्राम्य प्रकृति , खेत, खलिहान की उपस्थिति को अलग से लक्षित किया जा सकता है। बिम्बधर्मी कवितायेँ हैं – खेतों पर ओस भरा कुहरा , कुहरे पर भीगी चांदनी,आँखों में बदल से आंसू ,हंसती है उन पर चांदनी , (चांदनी कविता से) चांदनी को अपनी कुछ टिप्पणियों और बिम्बों के माध्यम से पूंजीवादी कविता के झूठे चकाचौंध और परजीवी शोषक वैभव का प्रतिक बना दिया है। उनकी कवितायेँ किसान प्रकृति , ग्रामीण जीवन के स्वप्नलोक के समांतर चित्रित करती रही। "20 जनकवि केदारनाथ अग्रवाल ने किसान श्रम और कर्म के साथ ग्रामीण जीवन जीवंत रूप में प्रतिबिंबित करने वाले कई गीत लिखे हैं। उनका काव्य किसान के पसीने से सिंचित है। ग्रामीण जीवन से प्रेरित उनके ग्रामीण जीवन के यथार्थ

बोध में कई स्तर आयाम और दृष्टियाँ हैं। कवि त्रिलोचन किसान जीवन के वास्तविक सुख-दुःख आशा निराशा और संघर्ष की कविता लिखते है। 'नागार्जुन की भाषा लोक भाषा के निकट है। कुछ कविताओं में संस्कृत के क्लिष्ट-तत्सम शब्दों का प्रयोग अधिक मात्रा में किया गया है , किन्तु अधिकतर कविताओं में तदभव तथा ग्रामीण शब्दों के प्रयोग के कारण इसमें एक विचित्र प्रकार की मिठास आ गई है। नागार्जुन की शैलीगत विशेषता भी यही है। वे लोकमुख की वाणी बोलना चाहते है। '21 'केदारनाथ अग्रवाल समकालीन समाज में कृषक जीवन की दुरुहता को भली भांति जानते है और कविता में उसका चित्रण करते हैं। समाज में उत्तराधिकार की प्रथा अनंतकाल से चली आ रही है और इस प्रथा से वही आनंद पाता है जो समृद्ध था , है और यह प्रथा उसे आगे भी समृद्ध रहने का वरदान देती है। लेकिन उस प्रथा में किसान-जीवन की क्या स्थिति होती है उसे कवि ने बेहद मार्मिक शब्दों से अभिव्यक्त किया है। '22 'किसान के बेटे की विरासत को लेकर लिखी गयी केदारनाथ अग्रवाल की प्रसिद्ध कविता की निम्नलिखित पंक्तियां निराला की भिक्षुक और तोड़ती पत्थर कविता की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए है - 'जब बाप मरा तो यह पाया भूखे किसान के बेटे ने , घर का मलबा, टूटी खटिया , कुछ हाथ भूमि ,–वह भी, परती। ग्रामीण जीवन में किसान पर प्रकृति के प्रति मिलने वाली उनकी आत्मीयता और राग दीर्ग कालीन साहचर्य का ही परिणाम है।23

"मुक्तिबोध के साहित्य में ग्रामीण जीवन का बोध परिलक्षित होता है खुले आसमान के नीचे अनौपचारिक ढंग से पके भोजन की सुगंध कवि की कविता तक पहुँच आती है। तारसप्तक में प्रकाशित प्रभाकर माचवे की गेहूँ की सोच गेहूँ की नियति के माध्यम से ग्रामीण जीवन का चित्रण और किसानों की दुर्दशा आर्थिक मजबूरियों का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करती है – बहुत कुछ जायेगा, लगान कुछ जाएगी, कर्ज किश्त बाकि रह जाएगी, झोपड़ियों की उन भूखी अंतड़ियों के लिये सूखी एक बेर और रोटी।" सहानुभति के स्तर पर ही सही उनकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन के प्रति आकर्षण और चिंता 1943 के आसपास शहरी माध्यम वर्ग के बुद्धिजीवियों में कुछ बची हुई थी।'24 इस प्रकार काव्य में ग्रामीण जीवन के युग का बोध एवं मर्म साहित्य को पूर्णता प्रदान करता है।

उपन्यासों में ग्रामीण जीवन – 'हिंदी उपन्यास का आरंभ उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से माना जाता है। हिंदी के आरम्भिक उपन्यास अत्यंत काल्पनिक थे। भारतेंदु काल में सामाजिक , ऐतिहासिक, तिलस्मी-ऐयारी, जासूसी तथा रोमानी उपन्यासों की रचना-परंपरा का सूत्रपात हुआ। यह परंपरा आगे चलकर द्विवेदी युग में अधिक विकसित और पुष्ट हुई सामाजिक जीवन की यथार्थ समस्याओं को लेकर उपन्यास लिखने की परंपरा प्रेमचंद युग से आरंभ हुई। '25 'हिन्दी साहित्य में उपन्यास के स्वरूप निर्धारण एवं विकास में प्रेमचन्द का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसलिए विद्वानों ने हिन्दी उपन्यासों के वर्गीकरण में प्रेमचन्द को आधार माना है। 'प्रेमचन्द पूर्व के उपन्यासों को पूर्व-प्रेमचन्द उपन्यास कहना केवल काल का नहीं , बल्कि विकास के सोपान का और उस सोपान की कुछ विशिष्ट प्रवृत्तियों का परिचायक है। इसी प्रकार प्रेमचन्द युग और प्रेमचन्दोत्तर युग कहना भी उपन्यास की दो विशिष्ट धाराओं का द्योतन करता है। '26 ' प्रेमचंदयुग में ग्राम जीवन पर

प्रेमचंद के अतिरिक्त जयशंकर प्रसाद , सियारामशरण गुप्त, शिवपूजन सहाय, वृंदावनलाल वर्मा आदि ने प्रमुख या गौण रूप से लेखनी चलाई है। प्रेमचंद के ग्राम जीवन से संबंधित उपन्यासों में प्रमुख रूप से 'प्रेमाश्रम'(1922), 'रंगभूमि' (1925), कर्मभूमि' (1933) ,'गोदान' (1936) का नाम लिया जाता है। प्रेमचंद के अतिरिक्त शिवपूजन सहाय के 'देहाती दुनिया' (1926), वृंदावनलाल वर्मा के 'लगन' (1929), सियारामशरणगुप्त के 'गोद' (1932), 'अंतिम आकांक्षा' (1934), जयशंकरप्रसाद के 'तितली' (1934) आदि उपन्यासों में भी ग्राम जीवन अंकित हुआ है। '27 'प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में सीमित व विस्तृत रूप में ग्राम जीवन का अंकन हुआ है वे हैं- 'नारी'-सियारामशरण गुप्त (1937), 'सुघर गंवारिन'- लाला रामजीलाल वैश्य- (1938), 'विसर्जन'-त्रिवेणी प्रसाद (1939), 'जूनिया'-गोविंदवल्लभ पंत (1940),'गरीब'-जगदीश झा विमल-(1941) ,'जमींदार' -प्रो. इंद्र विद्यावाचस्पति (1942), 'जी जी जी '-पांडेय बेचनशर्मा उग्र (1943), 'अंतिम बेला '-ओंकार शरद (1945), 'महाकाल' अमृतलाल नागर (1947) आदि। '28 'प्रेमाश्रम' किसान जीवन पर लिखा हिंदी का संभवतः पहला उपन्यास है। '29 इस युग के उपन्यासों में ग्राम जीवन के सामाजिक पक्ष के अंतर्गत समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण किया गया है।

छठे दशक के उपन्यासों में विशेषकर आँचलिक उपन्यासों में ग्राम जीवन का अंकन अधिक मात्रा में हुआ है। प्रमुख आँचलिक उपन्यासकारों में नागार्जुन,फणीश्वरनाथ रेणु ,भैरवप्रसाद गुप्त , उदयशंकर भट्ट, वृंदावनलाल वर्मा आदि ने भी इस दशक में ग्राम-जीवनपरक उपन्यास लिखे हैं।

'सातवें दशक के ग्राम जीवन से संबंधित हिंदी उपन्यासों में रामदरश मिश्र कृत 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ', हिमांशु श्रीवास्तव कृत 'नदी फिर बह चली', राही मासूम रजा कृत 'आधा गाँव', शिवप्रसाद सिंह कृत 'अलग-अलग वैतरणी', श्रीलाल शुक्ल कृत 'राग दरबारी' आदि का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है जिनमें ग्रामीण जीवन का व्यापक चित्रण मिलता हैं। '30 सातवें दशक के हिंदी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में ग्राम जीवन के आंचलिक परिवेश , ग्रामीणों के रहन-सहन, बनते-बिगड़ते संबंध आदि का अत्यंत यथार्थ चित्रण किया है। 'इसी श्रेणी में कुहासे का दायरा, अधूरीतस्वीर, दोहन, भूले बिसरेचित्र , कोहबर की शर्त , दुर्दिन की धूप , एक टुकड़ा ज़मीन, सच्चिदानंद 'धूमकेतु' लिखित माटी की महक, एक बीघा गोइंड , टपरेवाले, परतीपरिकथा, मार्कण्डेय का 'भूदान' आदि उपन्यास पूर्णतः ग्रामीण जीवन पर केन्द्रित रहे हैं। 31'सामाजिक चेतना की दृष्टि से इस दशक के कई उपन्यासों में वर्ग संघर्ष , रूढ़िवादिता, बिरादरी बहिष्कार , शोषित जीवन, दहेज प्रथा विरोध आदि का वर्णन किया गया है। आठवें दशक के ग्राम जीवन से संबंधित हिंदी उपन्यासों में रामदरश मिश्र का 'सूखता हुआ तालाब, शिवकरणसिंह का अस गाँव पस गाँव', जगदीशचंद्र का 'धरती धन न अपना', मधुकांत का ' गाँव की ओर' आदि का नाम लिया जा सकता है।

प्रेमचन्द के 'गोदान' में युवा पीढ़ी का प्रतिक गोबर ऋण ग्रस्त और जमींदारों के विरुद्ध शंखनाद करता है ।'32 'जल टूटता हुआ ' उपन्यास की बदमी तो उसी उम्र में विवाह के बंधन में फँस गई थी जब उसे यह भी मालूम नहीं था कि शादी-ब्याह का क्या मतलब होता है। बाल विवाह

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

के दुखद परिणामस्वरूव उसे वैधव्य जीवन का भार ढोना पड़ा।33 'पानी के प्राचीर' उपन्यास की विधवा गेंदा की स्थिति अत्यंत दयनीय है शादी के कुछ ही महीनों बाद वह अपने मायके लौट आती है। विधवा गेंदा के प्रति मानवीय संवेदना दिखाने के बजाय गाँव वाले उसे अशुभ मानते हैं। साथ ही गाँव के लोग हर साल अकाल का सामना करते है।'34 'शहर की भाँति अब गाँव में भी पति-पत्नी, पिता-पुत्र, भाई-भाई आदि रिश्तों में तनाव दिखाई देने लगा है । ग्रामीण अंचल और उसकी जनता के सुख-दुख , राग-द्वेष, उदारता-संकीर्णता, शक्ति-सीमा, प्रकृति-विकृति का अत्यंत यथार्थ चित्रण किया गया है।'35 राग दरबारी' उपन्यास में रूप्पन और छोटे पहलवान अपने-अपने पिता के प्रति कटु है , उपन्यास का शिवपालगंज गाँव स्वातंत्र्योत्तर भारत के विकृत और पतनोन्मुख गाँव का प्रतीक बनकर हमारे समक्ष आता है। 'नदी फिर बह चली' उपन्यास की अनाथ लड़की परबतिया किसान मजदूर की नेता बनती है और पूँजीवाद के संघर्ष में उनका मार्गदर्शन करती है। इसी प्रकार जयशंकर प्रसाद के उपन्यास 'तितली' में जमींदार इंद्रजीतकुमार , 'रंगभूमि' में पूँजीपति जानसेवक, 'देहातीदुनिया' में जमींदार रामटहलहसिंह आदि उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है। '36 शोषण के अतिरिक्त प्रेमचंदयुगीन उपन्यासों में अन्य सामाजिक समस्याओं का भी चित्रण हुआ है जैसे -छूआछूत, मूल्यहीनता, अनैतिक यौन समस्याएँ, ग्रामीणों के पारस्पारिक वैमनस्य , ईर्ष्या, द्वेष, छल-कपट, जुआ, शराबखोरी इत्यादि।

औद्योगीकरण तथा नगरीय प्रभाव के कारण ग्रामीण समाज में संयुक्त परिवार का विघटन प्रारंभ हो गया है। 'परती-परिकथा' फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास में संयुक्त परिवारों की टूटन व्याप्त है। जयशंकर प्रसाद के 'तितली' उपन्यास प्रमुख रूप से ग्राम्य जीवन के चित्र और समस्याओं का समावेश किया गया है। इसमे ग्रामीण जनता की निर्धनता, सरलता, स्वार्थपरता, दुर्बलता पर यथेष्ट प्रकाश डाला गया है ।'37

कहानियों में ग्रामीण जीवन – 'आजादी के बाद हिन्दी कहानी को करीब 68 वर्ष हो चुके हैं। हिन्दी कहानी में एक नई ऊर्जा का सूत्रपात हुआ जिसे नई कहानी के आंदोलन के रूप में जाना जाता है। हिंदी कहानी में उन्नीस सौ सत्तर से पहले का दौर अकहानी के रूप में झेले गए किसी दु:स्वप्न की तरह है, जिसमें सारे मानवीय मूल्यों पर प्रश्नचिह्न लग गए थे। इसके बाद ही हिंदी कहानी में 'गांव' की वापसी हुई और रामधारी सिंह दिवाकर , शिवमूर्ति और मिथिलेश्वर जैसे चर्चित कथाकार सामने आए। बीसवीं सदी के आठवें दशक की हिंदी कहानी कि एक खास उपलब्धि जनपक्षीय चेतना के साथ गांव और ग्रामीण संदर्भों की व्यापक स्वीकृति है , लेकिन प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी में 'कफन' और 'पूस की रात' का गांव लगभग गायब है। कमोबेश यही स्थिति नयी कहानी के शहरी बाबू राजेंद्र यादव , मोहन राकेश और कमलेश्वर के रचना संसार में भी है। इस दौरान फणीश्वरनाथ रेणु , शिवप्रसाद सिंह, मार्कंडेय और शेखर जोशी आदि गांव को लेकर आते हैं , ! आठवें दशक के पूर्वार्द्ध में नए सिरे से गांव की व्यापक और जुझारू वापसी हुई , जो नि:संदेह प्रेमचंद की कहानी 'कफन' से आगे का गांव है।38

जयशंकर प्रसाद की कहानी 'ग्राम' का ये कथा वाक्य -'यहाँ के जमींदार बहुत धर्मात्मा हैं, उन्होंने कुछ सामान्य 'कर' पर यह भूमि दी है , इसी से

अब हमारी जीविका है। इतना कहते-कहते स्त्री का गला अभिमान से भर आया और कुछ कह न सकी।' गाँव के अनकहे हालात और दयनीय स्थिति का परिचय देती है। 39 ग्रामीण जीवन को रेखांकित करने वाली प्रेमचंद , फणीश्वरनाथ रेणु और मार्कंडेय की कथा परंपरा की पहचान विजयकांत, संजीव, शिवमूर्ति, मिथिलेश्वर, नवेंदु, श्रीकांत, शेखर, मोहर सिंह यादव , रामदेव शुक्ल और उदय प्रकाश आदि की रचनाओं में की जा सकती है। 'ऐसी ही पहचान बनाई है कथाकार रामधारीसिंह दिवाकर ने , जिनकी 'अलग-अलग 'अपरिचय' तथा 'संक्रमण' जैसी कहानियां ग्रामीण जीवन में उनकी गहरी पैठ का परिचय देती है। 'जिंदगी और गुलाब के पुल , परिंदे, वापसी जैसी कहानियाँ सामान्य मनुष्य की गरीबी , उससे उत्पन्न मजबूरियाँ, दांपत्य संबंधों, प्रेम के निरूपण अथवा समाज में नारी की बदली हुई स्थिति को उजागर करती हैं। राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, भीष्म साहनी, अमरकांत, निर्मल वर्मा, उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, शिवप्रसाद सिंह , फणीश्वरनाथ रेणु , मार्कंडेय, रघुवीर सहाय, शानी, शेखर जोशी, शैलेश मटियानी, हरिशंकर परसाई आदि अनेक कहानीकारों ने अपनी-अपनी तरह से हिन्दी कहानी के भंडार को समृद्ध किया।40

"ग्रामीण परिवेश पर कहानियां कम लिखी जाती हैं। कभी-कभार कुछ कहानियां सामने आती भी हैं तो निराशा ही हाथ लगती है। लेखक शहर में बैठकर गांव की कल्पना करता है या गांव में बिताए गए जीवन की स्मृतियों को बुनता है । ग्रामीण वास्तविकता पर लेखक का पूरा अधिकार होना चाहिए और दिवाकर की तरह उसे भाषा में बांध सकने की सामर्थ्य भी होनी चाहिए। ग्राम कथाओं का हिंदी साहित्य में अपना अलग स्थान है। कई दशक तक कहानियों से गांव नदारद रहा, लेकिन कहानी का अगला उन्मेष जब भी होगा , गांव से जुड़कर ही होगा-स्त्री और दलित विमर्श के बाद ग्राम विमर्श , गांव से जुड़ी कहानियों का नया दौर। तब रामधारी सिंह दिवाकर, संजीव और शिवमूर्ति जैसे कथाकार हिंदी कहानी के केंद्र में चर्चा का विषय होंगे। 41 प्रेमचंद की नमक का दरोगा, ईदगाह, पंच परमेश्वर, बड़े भाई साहब, पूस की रात, शतरंज के खिलाड़ी और कफन जैसी कहानियां आज विश्व साहित्य का हिस्सा बन चुकी है।

निबन्धों में ग्रामीण जीवन- 'निबंध गद्य लेखन की एक विधा है। लेकिन इस शब्द का प्रयोग किसी विषय की तार्किक और बौद्धिक विवेचना करने वाले लेखों के लिए भी किया जाता है। हिंदी साहित्य में अनेक निबन्धकार हुए हर तरह के निबन्ध लेखकों ने अपनी प्रयोगशीलता से हमारे साहित्य की श्री-वृद्धि की।'42

'भारतेन्दु हरिश्चंद्र प्रतापनारायण मिश्र , बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुंद गुप्त , सरदार पूर्ण सिंह , महावीर प्रसाद द्विवेदी, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, महादेवी वर्मा, कुबेरनाथ राय, विद्यानिवास मिश्र , नंददुलारे वाजपेयी ' 43

'ग्रामीण जीवन पर आधारित निबंध में बाल कृष्ण भट्ट का नाम सर्वोपरि है। उनका 'ग्राम्य जीवन 1901 में प्रकाशित निबन्ध ग्रामीण जीवन के परिवेश से प्रेरित है वे लिखते हैं -- हरा-भरा सरसों का साग तुरंत का मथा मक्खन, हींग और जीरा में बघारी हुई भैंस की पनीली दही से, जैसा गाँव के रहने वालों को मधुर स्वादिष्ट भोजन सब भाँति सुगम है वैसा नगर के धनियों को भी बहुत-सा खर्च करने पर मयस्सर नहीं है। तुम्हारी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

समग्र संपत्ति का सार भूत पदार्थ 'गोधन' अर्थात् गाय, बैल, भैंस, छेरी, भेड़ी इत्यादि है। गोधन-संपन्न किसान छोटे-मोटे जमींदारों को भी कुछ माल नहीं समझता। 44 'प्रगतिशील साहित्य की अवधारणा के अनुरूप ग्रामीण जीवन का यथार्थ जिसके अंतर्गत शोषित किसान और उसके शोषण में सहायक रीति रिवाजों और परम्पराओं की भर्त्सना की है तो किसान जीवन के प्रति आत्मीय और सम्मान भी। और इन सबका निचोड़ साहित्य की विधाओं में दृष्टिगत होता है।'45

वर्तमान में प्रासंगिकता एवं निष्कर्ष

औद्योगीकरण, शहरीकरण, बाजारवाद और भूमंडलीकरण की दिशा में हुए देश के विकास और सरकारी नीतियों ने एक पेशे के रूप में किसान जीवन को अप्रतिष्ठित किया है , इससे निः संदेह ग्रामीण जन जीवन प्रभावित हुआ है। शहरीकरण की अंध मानसिकता ने सूचना,प्रोद्योगिकी, जनसंचार क्रांति, आर्थिक उदारीकरण,निजीकरण एवं वैश्वीकरण के बढ़ते वर्चस्व ने ग्रामीण जीवन पर विचार विमुख कर दिया है। प्रेमचंदोत्तर काल से तुलनात्मक रूप में अब ग्रामीण जीवन साहित्य में कम परिलक्षित होता है। उत्तर आधुनिक युग तक पहुँचे भारतीय जनमानस में आज आदर्श,नैतिकता के साथ तर्कवाद,यथार्थवाद ,और भोतिकतावादी होने के कारण उसमें संवेदन सत्यता, ईमानदारी,करुणा आदमी के जीवन तक पहुँचने के मूल्य तिरोहित होने लगे है इनका दुष्परिणाम आज 'साहित्य' में 'ग्रामीण जीवन' भाव शून्य होता द्रष्टिगत हो रहा है।'46 प्रेमचंद के पोते आलोक राय का कथन प्रचलित है – 'हर कालखंड में प्रवृत्तियां हावी होती है। नये रचनाकारों में व्यक्तिवादी नजरिया जादुई आकर्षण कम होने का कारण हो सकता है।' विनोबा जी ने ग्राम परिवार भावना के लिये लिखा है- बाजार संस्कृति जैसे-जैसे प्रभावित होती गई गाँव जीवन में भी सम्बन्ध की बजाय साधनों का महत्व बढ़ गया इसी तरह के समाजशास्त्री ग्रामीण समाज के अध्ययन के लिए क्षेत्रीय और प्रलेखकीय स्त्रोतों का आश्रय लेता है। बदलते हुए परिवेश में गाँव क्या रूप ग्रहण कर रहा है ? उसका भावी स्वरूप क्या होगा ? इन सभी बातों का निरन्तरता से अध्ययन आवश्यक है। साहित्य उसे संस्कारित रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है किन्तु समय की रफ्तार से उसकी पकड़ ढीली होती जाती है और समसामयिक ग्रामीण परिवेश से तादात्म्य के अभाव में लेखक अटपटे कथानक बुनता चला जाता है। ग्रामीण वास्तविकता पर लेखक का पूरा अधिकार होना चाहिए भाषा में बांध सकने सामर्थ भी होना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ

1 भारतेन्दु हरिश्चंद्र के साहित्य में भाव बोध स्थापनाएं और प्रतिस्थापनाएं –डॉ वीरेंद्र अग्रवाल
2 हिंदी उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण जीवन -डॉ. तरन्नुम बानो
3 विभिन्न कालों में ग्राम-वीणा मासिक पत्रिका अंक दिसम्बर
4 हिंदी कहानी का विकास –मधुकेश
5 गाँव की जिन्दगी से संवेदना पूर्ण साझेदारी रामधारी सिंह दिवाकर-दस प्रतिनिधि कहानियाँ
6 हिंदी साहित्य का इतिहास- sahityaganga.com
7 हिन्दी समांतर शब्दकोश - अरविंद कुमार कुसुम कुमार (नेशन बुक ट्रस्ट इंडिया) द्वारा प्रकाशित।
8 हिंदी साहित्य वैचारिक प्रष्ठभूमि- सम्पादक डॉ लालचंद गुप्त 'मंगल' प्रष्ठ २
9 भारतीय साहित्य कोष [खंड 1]मीमांसक सम्पादक डॉ सुरेश गौतम

10 समावर्तन मासिक पत्रिका नवम्बर 2015 अभिमुख- रमेश दवे
11 वीणा मासिक पत्रिका-अंक दिसम्बर 2015 विभिन्न कालों में भारतीय ग्राम
12 ग्रामीण जीवन में साहित्य –कृतिका [अंतराष्ट्रीय रिसर्च जनरल आफ इयरली हुमिनिटीज एंड सोशल साइंसेस
13 हिंदी साहित्य का इतिहास –आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
14 हिंदी साहित्य का इतिहास sahityaganga.com
15 http://www.hindisamay.com/.
16 आधुनिक हिंदी पद्य का इतिहास-wikipedia.org
17 हिंदी साहित्य का इतिहास sahityaganga.com
18 ग्राम्या-ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति और यथार्थ का वर्णन त्रेमासिक- ई पत्रिका –'आरम्भ'
19 आधुनिक साहित्य चिन्तन और कुछ विशिष्ट साहित्यकार- डॉ नरेंद्र सिंह
20 sahityaganga.com
21 hindisamay.com
22 राजस्थान -[राजस्थान साहित्य अकादमी –आलेख 'अनेकान्त' डॉ दीपक पाण्डे http://rsaudr.org/]
23 आधुनिक साहित्य चिन्तन और कुछ विशिष्ट साहित्यकार -डॉ नरेंद्र सिंह
24 http://www.hindisamay.com/
25 प्रेमचंद की रचनाओं में ग्रामीण परिवेश और राष्ट्रीय चेतना
26 शोध:प्रेमचंद-पूर्व हिन्दी कथा साहित्य में उभरता समाज और शैल्पिक प्रविधियाँ /डॉ. राजेश कुमारी कौशिक
27 प्रेमचंद की रचनाओं में ग्रामीण परिवेश और राष्ट्रीय चेतना
28 हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन –डॉ तरन्नुम बानो
29 प्रेमचंद के उपन्यास 'गौदान'में भारतीय जीवन पर आर्थिक कारकों का प्रभाव-शोध प्रवाह]
30 हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन –डॉ तरन्नुम बानो]
31 प्रेमचंदोत्तर कालीन उपन्यासों में ग्रामीण जीवन- देवगुड़ी हुसैनवली
32 गोदान उपन्यास एवं समकालीन अर्थव्यवस्था – शोध प्रवाह .
33 हिंदी उपन्यासों में अंकित ग्रामीण जीवन
34 रामदरश मिश्र का रचना संसार https://hi.wikipedia.org/
35 प्रेमचंदोत्तर कालीन उपन्यासों में ग्रामीण जीवन - देवगुड़ी हुसैन वली
36 हिंदी उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण जीवन –डॉ तरन्नुम बानो
37 http://bharatdiscovery.org/
38 हिंदी साहित्य का इतिहास –sahityaganga.com
39 जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ –ग्राम
40 hindisamay.com
41 रामधारी सिंह दिनकर की दस प्रतिनिधि कहानियाँ- गाँव की जिन्दगी से संवेदना की साझेदारी
42 हिंदी साहित्य का इतिहास –sahityganga.co
43 https://hi.wikipedia.org
44 ग्रामीण जीवन -बाल कृष्ण भट्ट
45 निबंध संग्रह –http://www.abhivyakti-hindi.org/
46 ग्रामीण जीवन में साहित्य –'कृतिका' अंतराष्ट्रीय रिसर्च जनरल आफ इयरली हुमिनिटीज एंड सोशल साइंसेस-2015-16